

## किसान छात्रावास, मारोठ (नावां, नागौर)

### 1. छात्रावास का नाम व पता — किसान छात्रावास, मारोठ (नावां, नागौर)

**2. इतिहास** — सन् 1950 में महाराजपुरा के चौधरी ईश्वर राम ने किसान केसरी बलदेवराम मिर्धा की प्रेरणा से इस क्षेत्र में शिक्षा व समाज जागृति के लिए अपने क्षेत्र के समाज बन्धुओं के साथ मिलकर मारोठ गाँव में किसान छात्रावास की स्थापना की। इस कार्य में श्यामगढ़ के शिवदान बाज्या, राजास के बाबूलाल खेरवा, मारोठ (नावां, नागौर) के हनुमान बक्स पारीक, भगवानपुरा के गंगाराम चौधरी, सौलाया के कानाराम ढाका एवं खांगाराम ढाका, लिखमा राम ढाका, लोहराणा के कज्जाराम सेवदा, रामुराम बिजारणिया, नानूराम बुगासरा तथा हनुमान राम फल्डोलिया, देलेलपुरा के नारायण सिंह चौधरी, दांता रामगढ़ (सीकर) के लिखमाराम सामोता, श्यामगढ़ के लादूराम सेवदा आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। छात्रावास वार्डन के रूप में रूगनाथ राम (बावड़ी) ने सराहनीय कार्य किया। सन् 1950 से लेकर 1959 तक छात्रावास की व्यवस्थाओं में कई कठिनाइयाँ आईं। चूंकि स्कूल मारोठ गाँव में स्थित थी जहाँ जाट नहीं रहते थे, इसलिए मारोठ गाँववासियों का असहयोग रहा। गाँवों से आने वाले छात्र अधिकतर जाट ही होते थे इसलिए भी जागीरदार तथा राजपूतों का विरोध अधिक रहता था।

जुलाई 1960 में यहाँ पर स्थित सरकारी स्कूल में प्रधानाध्यापक के पद पर कुचेरा नागौर से स्थानान्तरण होकर जगराम बेहरा ने पदभार सम्भाला। जगराम बेहरा स्वयं ने (1934–1942) किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी, इसलिए छात्रावास के महत्त्व से वे भलीभाँति परिचित थे। अतः यहाँ पर आते ही उन्होंने जाट बन्धुओं के सहयोग से छात्रावास की व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित किया। मारोठ में नागौर जिले की दूसरी सैकन्डरी स्कूल प्रारम्भ हुई तब दूरदराज से यहाँ ग्रामीण छात्र अध्ययन हेतु आने लगे। किसान छात्रावास में समुचित स्थान न होने के कारण प्रधानाध्यापक जगराम बेहरा के प्रयासों से छात्रावास हेतु एक दूसरा भवन किराये पर लिया गया। दोनों छात्रावास भवनों में करीब 125 से अधिक छात्र रहते थे। किसान छात्रावास मारोठ, भी सन् 1956–57 में पंजीकृत किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर की उप शाखा के रूप में शिक्षा विभाग, बीकानेर के आदेश दिनांक 22 अक्टूबर 1956 के अनुसार मान्यता प्राप्त छात्रावास था।

मारोठ किसान छात्रावास के विकास व संचालन में 1959–1960 ई. से लेकर 1968 ई. तक जिनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, उनका नाम प्रधानाध्यापक जगराम बेहरा है। गाँव सूरपुरा खुर्द, भोपालगढ़, जोधपुर के जगराम का जन्म 02 जुलाई 1924 ई. को हुआ। इनके पिता का नाम पन्नाराम था। इनकी शिक्षा मास्टर रघुवीर सिंह के सानिध्य में किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर में रहते हुए हुई। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण इन्होंने 10वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् अध्यापन का कार्य चुना तथा साथ ही उच्च शिक्षा हेतु अध्ययन भी जारी रखा। एम.ए., बी.एड. के पश्चात् इनका चयन राजस्थान लोक सेवा आयोग से सन् 1958 में प्रधानाध्यापक माध्यमिक विद्यालय के लिए हुआ था। जगराम बेहरा अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के साथ साहसी व्यक्तित्व के धनी थे। एक अच्छे शिक्षक के साथ जगराम बेहरा अच्छे लेखक तथा कवि भी थे। तत्कालीन समय में किसान वर्ग की समस्याओं को उजागर करने तथा शिक्षा प्रचार हेतु उन्होंने एक छोटा अखबार भी प्रारम्भ किया जिसके स्वयं सम्पादक थे। धीरे-धीरे मास्टर जगराम जगजी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

प्रधानाध्यापक पद पर चयनित होने से पूर्व इन्होंने जोधपुर, फलौदी, बाड़मेर, लाडनूं, जवारगढ़ आदि स्थानों पर अध्यापन कार्य किया। सन् 1953-1954 में जोधपुर विद्याशाला शिक्षक ट्रेनिंग स्कूल में वे प्रधानाध्यापक रहे। इसी दौरान इन्होंने पटना विश्वविद्यालय से बी.एड. की डिग्री ड्राईंग में प्राप्त की। प्रधानाध्यापक पद पर इनकी पहली नियुक्ति कुचेरा माध्यमिक विद्यालय में हुई। तत्पश्चात् इनका स्थानान्तरण जुलाई, 1960 में मारोठ विद्यालय में हुआ। उस समय मारोठ स्कूल भवन में 3-4 कक्षा कक्ष ही थे जिसमें प्राईमरी तथा सैकण्डरी स्कूल साथ-साथ संचालित होती थी। जगाराम जी ने यहाँ आते ही इस स्कूल भवन के विकास हेतु कलकत्ता में मारोठ (नागौर) के सेठ फूलचन्द, सुगनचन्द गोधा से सम्पर्क किया। सेठ गोधा बन्धुओं के हर सम्भव सहयोग के चलते ही मारोठ स्कूल की प्रथम पत्रिका का प्रकाशन सम्भव हुआ जिसमें सीताराम शर्मा रचित कविता की दो पंक्तियों से मास्टर जगाराम का उल्लेखनीय योगदान स्वतः स्पष्ट है —

देखो झाँकी बाँकी है, यह मारोठ विद्याधाम की ।

यहाँ प्रेरणा सफल हुई बेहरा श्री जगाराम की।।

जगजी मास्टर साहब द्वारा समाज सुधार तथा शिक्षा जगत में की गई अनुकरणीय सेवाएं सदैव किसान वर्ग को प्रेरित करती रहेंगी। वे भली भाँति जानते थे कि शहरी क्षेत्र में अच्छे स्कूल हैं लेकिन ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों में आवश्यक शैक्षणिक सुविधाओं का अभाव रहता है। इसलिए पहले मारोठ स्कूल की भौतिक तथा शैक्षिक जरूरतों को पूरा किया। ग्रामीण छात्र निर्धनता के कारण बिना छात्रावास सुविधा के उस समय पढ़ नहीं सकते थे। इसलिए इन्होंने अपने अल्प सेवाकाल में छात्रावास व्यवस्था तथा शैक्षणिक व्यवस्थाओं का ग्रामीण क्षेत्र में विस्तार राज्य सरकार तथा जन भागिता से करवाया। कर्मठ शिक्षाविद्, समाजसेवी, लेखक एवं कवि जगाराम बेहरा का दिनांक 26 नवम्बर 1968 को 44 वर्ष की अल्प आयु में निधन हो गया। समाज की नई शिक्षित पीढ़ी को ऐसे प्रेरणादायी व्यक्तित्व से प्रेरणा लेनी चाहिए।

डॉ. गंगाराम जाखड़, एच.आर इसराण जोगाराम सारण की पुस्तक “मारवाड़ जाट समाजिक एवं शैक्षिक जागृति” से साभार